classmate
Date 4/05/20
Page 1

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt of Philosophy
Jagjiwan college
V.K.S.U, Ara.

Sub:- Philosophy
class- B.A, Part-II (Hons)
Paper- IV

Topic ⇒ स्पीनोजा का मन और शरीर सम्बन्ध
(Mind and Body Relation of Spinoza)

स्पीनोजा ने जड़ और चेतन के आपसी सम्बन्धों की व्याख्या समानान्तरवाद (Theory of Parallelism) के आधार पर की है। पर हम उनकी व्याख्या का अध्ययन करें इससे पूर्व यह स्वीकार कर लेना आवश्यक है कि चाहे एक ही सत्ता के जड़ और चेतन दो रूप क्यों न हों उनमें गुणात्मक भेद है अवश्य।

स्पीनोजा ~~के~~ के अनुसार परम सत्ता एक है और इसलिए विश्व की चेतनाओं की रीति अथवा विधि भी एक होगी। यह मानना पूर्णतः असंगत और निराधार है कि जब शरीर पर आघात होता है तो उसका प्रभाव मन पर पड़ता है और इसी प्रकार मानसिक इच्छायें शरीर को क्रियाशील बनाती है। सत्य तो यह है कि हमें अनुभूतियाँ मानसिक या शारीरिक रूप में होती है।

देकार्त की यह उपमा की घुड़सवार के घोड़े मारने से घोड़ा दौड़ता है और घोड़े के दौड़ने के कारण घुड़सवार का शरीर क्रियाशील होता है, ठीक उसी प्रकार मन के संकेत से शरीर क्रियाशील होता है या शरीर के क्रियाशील होने से मन पर प्रभाव पड़ता है पूरी तरह से असान्य है। इससे भिन्न स्पीनोजा के अनुसार परम सत्ता एक है और इसलिए चेतनाओं के व्याप्त होने की विधि एक है। जब हम उस विधि को अन्दर से देखते हैं तो यह मानसिक प्रतीत होता है और बाहर से देखने पर भौतिक। स्पीनोजा के अनुसार शरीर में ऐसा कुछ नहीं जो मन को सोचने के लिए बाध्य करे और न ही मन में यह क्षमता है कि वह शरीर को क्रियाशील बनाये। स्पीनोजा का कहना है कि जिस प्रकार एक वृत और एक वृत का प्रत्यय एक दूसरे के समान हैं उसी प्रकार विचार और विस्तार भी एक दूसरे के समानान्तर है। यदि यदि हम मन में एक वृत का प्रत्यय बनाते हैं तो यह विचार कहा जाता है और असीम देश पर एक वृत बनाते हैं तो यह विस्तार कहा जाता है।

स्पीनोजा ने अपने विचारों को और

अधिक स्पष्ट करने के लिए एक दूसरी उपमा का प्रयोग किया है। यदि रबड़ के एक पारदर्शक गेंद पर बनी हुई लकीर को हम बाहर से देखते है तो वह लकीर बाहर की ओर उभरी (Convex) प्रतीत होती है पर वही लकीर गेंद के अन्दर से देखने पर धंसी (Concave) मालूम पड़ती है। लकीर लकीर एक ही है पर यह हमारे देखे जाने की विधि के कारण दो प्रकार की प्रतीत होती है। स्पीनोजा के अनुसार ठीक यही बात विचार और विस्तार के संदर्भ में भी सत्य है। ये दोनों ईश्वर में समानान्तर रूप से एक साथ क्रियाशील है जिन्हे हम भ्रमवश अलग-अलग अनुभव करते है।

इस समस्या को और भी स्पष्ट रूप से समझने के लिए एक और उदाहरण पर विचार करेंगे। पृथ्वी की दैनिक गति के परिणाम स्वरूप रात और दिन होते है। रात और दिन एक दूसरे से भिन्न है फिर भी यह भी सत्य है कि दोनों पृथ्वी की दैनिक गति के परिणाम है जो सदा समानान्तर रूप से घटित होते है। स्पीनोजा ने कहा है कि शरीर मन को सोचने के लिये बाध्य नहीं कर सकता और न ही मन शरीर को क्रियाशील होने के लिए।

इस प्रकार हम देखते है कि स्पीनोजा ने देकार्त द्वारा स्वीकृत क्रिया-प्रतिक्रिया विचार का खण्डन करते हुए मन और शरीर के आपसी सम्बन्धों की व्याख्या समानान्तरवाद के आधार पर की है।

यदि देकार्त द्वारा प्रतिपादित क्रिया-प्रतिक्रियावाद जड़ और चेतन के आपसी सम्बन्धों की व्याख्या में असमर्थ है तो स्पीनोजा का समानान्तरवाद भी असंगतियों से अछूता नहीं है। इन्होनें मन और शरीर को स्वरूप में एक दूसरे से भिन्न मानने के बाद भी उनकी सत्ता को एक दूसरे से स्वतन्त्र नहीं माना है।

स्पीनोजा की उपरोक्त व्याख्या के विरुद्ध यह कहना असंगत न होगा कि उनकी व्याख्या मानवीय जीवन की अनुभूतियों का अनादर करती है। स्पीनोजा यह मानते हैं कि जड़ और चेतन अपने स्वरूप में एक दूसरे से भिन्न है लेकिन वे नदी के दो किनारों की भांति एक दूसरे से पृथक नहीं और इसीलिए उनके बीच क्रिया-प्रतिक्रिया सम्भव नहीं। परन्तु हमारे जीवन की अनेक अनुभूतियाँ इस बात के प्रमाण है कि कभी मन शरीर को तो कभी शरीर मन को प्रभावित करते है।

उदाहरण के लिए यदि हमारी उँगली जलती है तो आवश्यक रूप से हमारे मन को भी कष्ट का अनुभव होता है। इसी प्रकार यदि कोई दुःखद या सुखद समाचार मिलता है तो हमें मानसिक दुःख या सुख का अनुभव तो होता ही है साथ ही हमारे चेहरे पर उसकी स्पष्ट छाप अंकित हो जाती है। भय या क्रोध की मानसिक अनुभूति के अनुरूप ही उनके शरीर पर उसका प्रभाव देखा जा सकता है। अतः यदि यह सत्य है तो निःसंदेह स्पीनोजा का समानान्तरवाद मान्य नहीं कहा जा सकता।

फिर स्पीनोजा यह मानते हैं कि शरीर में कोई क्रिया ऐसी नहीं होती जिसका साथ-साथ ज्ञान मन को नहीं होता। लेकिन मनोवैज्ञानिक खोजों से उनकी यह मान्यता निराधार सिद्ध होती है। मनोवैज्ञानिक यह बताता है कि गहरी निद्रा या स्वप्नावस्था में मन सक्रिय रहता है पर क्या उसी अवस्था में हम शरीर को स्थिर नहीं पाते ?

सारांश यह है कि मन और शरीर के आपसी सम्बन्धों की व्याख्या हेतु प्रस्तुत स्पीनोजा का समानान्तरवाद तर्कपूर्ण नहीं कहा जा सकता।